© 2018 IJSRST | Volume 4 | Issue 5 | Print ISSN: 2395-6011 | Online ISSN: 2395-602X

महाकाव्यों में वर्णित नारियों की भूमिका

डॉ0 शिल्पी श्रीवास्तव
डी0फिल्–संस्कृत
इलाहाबाद, विश्वविद्यालय
इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत

वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वतीपरमेश्वरौ।।[1]

रघुवंश महाकाव्य में उद्धृत उपर्युक्त पंक्तियाँ समाज में स्त्री व पुरुष की समानता का परिचायक हैं। भारतीय संस्कृति अर्धनारीश्वर की परम्परा से ओतप्रोत है अर्थात् समाज में महिला एवं पुरुष का समान स्थान होना चाहिए। 'नारी' समाज के मूल स्तम्भ का अर्धभाग है। यह वह शब्द है, जिसे सुनकर स्त्री के अनेक रूप दृष्टिपटल पर दृश्यमान होने लगते हैं। वह माँ है, भगिनी है, सुता है एवं अर्धांगिनी है। वह किसी भी रूप में हो किन्तु अपने उत्तरदायित्वों के निर्वहन में कदापि पश्चगामी नहीं होती। एवमेव नारी को 'शक्ति' रूप माना गया है। 'मनुस्मृति' में कहा गया है– 'यत्रनार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता।'' अर्थात् जहाँ नारी पूजनीया है, वहाँ देवता का निवास है, यहाँ 'पूजनीया' का अर्थ सम्मान देने से है। आज के समाज में नारी को एक सशक्त स्थान प्राप्त है, वह किसी भी रूप में पुरुषों से कम नहीं है, जिसके अनेकों उदाहरण हमारे सामने उपस्थित हैं इंदिरा गांधी, अरूंधती राय, सुनीता विलियम्स, किरण बेदी, चंदा कोचर, मैरी कॉम, एकता कपूर, सुनीता नारायण, मेधा पाटेकर, प्रतिभा पाटिल, ज्योत्सना सूरी, पी0वी0 सिंधू, पी0टी0 उषा, महादेवी वर्मा, सुभद्रा कुमारी चौहान आदि भारत की प्रमुख सफल महिलाएं हैं। सफल महिला की सूची में संख्या की अधिकता के कारण सबका नाम उद्धृत करना सम्भव नहीं है।

आज महिला सशक्त है, वह देवी स्वरूपा है, इस बात से हम सभी सहमत हैं। किन्तु जिस प्रकार एक सिक्के के दो पहलू होते हैं, उसी प्रकार हमारे समाज में स्त्रियों की दशा है। इसी समाज में स्त्री का पर्याप्त शोषण भी किया जाता है। वर्तमान काल से लेकर प्राचीन काल तक के समय पर दृष्टिपात करने से हमें नारी के सम्मान व अपमान के दोनों ही रूप दिखाई देते हैं। कहने का तात्पर्य यह है कि भले ही हमारी संस्कृति में प्राचीन काल में स्त्रियों की दशा बहुत उत्तम रही हो तथापि उनके शोषण में भी कोई कमी नहीं थी।

साहित्य समाज का दर्पण माना जाता है। साहित्य के अध्ययन से हमें तत्कालीन समाज की स्थिति के विषय में ज्ञान प्राप्त होता है। साहित्य का बहुत ही विशाल भाग महाकाव्यों से भरा पड़ा है। प्राचीन महाकाव्यों में संस्कृत व हिन्दी के महाकाव्यों के अध्ययन से समाज के विषय में पर्याप्त जानकारी मिलती है। संस्कृत महाकाव्यों में प्रमुख है– रामायण, महाभारत, कुमारसम्भव, रघुवंश, बुद्धचरित, नैषधीयचरितम्, किरातार्जुनीयम्, शिशुपालवधम् आदि।

हिन्दी महाकाव्यों में प्रमुख हैं– साकेत, पद्मावत, रामचरितमानस, उर्वशी, प्रियप्रवास आदि।

आज इस शोध पत्र के माध्यम से हम कुछ प्रमुख महाकाव्यों में वर्णित नारी की स्थिति पर प्रकाश डालने का लघु प्रयास करेंगे।

रामायण :

रामायण लौकिक संस्कृत का आदिकाव्य एवं हिन्दू धर्म का धार्मिक ग्रंथ माना जाता है। इस महाकाव्य में जीवन के उत्तम आदर्शों को प्रस्तुत किया गया है। आज भी हमारा समाज राम राज्य की कल्पना करता है। किन्तु आदर्शों से भरे इस समाज में भी नारी की स्थिति शोचनीय ही थी, जिसका सर्वप्रमुख उदाहरण 'सीता' है। अनेक परीक्षाओं से गुजरने के बाद भी लोकमर्यादा के कारण अपनी गर्भवती स्त्री को जंगल में छोड़ देना कहाँ का न्याय है? क्या राजा राम को अपने नगरवासियों के प्रति आदर्श प्रस्तुत करना इतना अनिवार्य था कि उन्हें अपने उत्तरदायित्वों का भी ध्यान नहीं रहा? क्या एक पति का अपनी गर्भवती पत्नी के प्रति कोई कर्तव्य नहीं होता? उन्होंने यह कृत्य करके जीवन पर्यन्त के लिए कलंक ले लिया कि वे अच्छे पति नहीं थे। उन्होंने अपने पति धर्म का पालन कदापि नहीं किया, न ही अपनी पत्नी पर विश्वास किया, न ही गर्भकाल में उसे उचित सुविधा प्रदान की।

'अहल्या' जिसे गौतम ऋषि की पत्नी माना जाता है, उन्होंने सिर्फ इसलिए अहल्या को पत्थर की शिला में बदल दिया क्योंकि इन्द्र ने छद्मवेश में उनकी अनुपस्थिति में उनकी कुटिया में प्रवेश किया, जिसे कुटिया से बाहर निकलते हुए गौतम ऋषि ने देख लिया। उन्होंने यह जानने का प्रयास नहीं किया कि आखिर वास्तविकता क्या है? यह नारी का शोषण ही तो है।

'सीता' अलौकिक प्रतिभा सम्पन्न नारी थी। लंका में सीता को पहचानकर उनकी प्रशंसा करते हुए हनुमान जी ने कहा–

दुष्कर कृतवान् रामो हीनो यदनया प्रभुः।
धारयत्यात्मनो देहं न शोकेनावसीदति।।
यदि नामः सुद्रान्तां मेदिनीं परिवर्तयेत्।
अस्थाः कृते जगच्चापि युक्तमित्येर्व मे मतिः।।[2]

सुन्दरकाण्ड में सीता को 'रामा' के नाम से भी अभिहीत किया गया है– **'विरराम रामा'**[3] अर्थात् अन्य दृष्टि से सीता, राम का ही रूप है, वह राम की अनन्य हृदया एवं प्रेयसी पत्नी है, जिसके लिए उन्होंने समुद्र पार करके रावण से युद्ध कर उसे पराजित किया एवं सीता को सम्मान सहित अयोध्या वापस लेकर आए अर्थात् राम राज्य में नारी सम्मान बहुत महत्त्वपूर्ण था। **काव्यं रामायणं कृत्स्नं सीतायाश्चतितम्महत्।**[4]

एक अन्य प्रसंग में 'कैकेयी' के चरित्र को उत्तम बताते हुए राम भरत से कहते हैं कि माता कैकेयी का पिता दशरथ से विवाह इसी शर्त पर हुआ था कि राज्य उनके पुत्र को मिले–

पुरा भ्रातः पिता नः स मातरं ते समुद्वहन्।

मातामहे समाश्रौषीद्राज्यशुल्कमनुत्तमम्।।[5]

कैकेयी वीरवती स्त्री के रूप में स्थापित है, वह दशरथ के साथ न केवल युद्धभूमि में जाती है बल्कि अपने शौर्य का परिचय भी देती है।

इसके अतिरिक्त रामायण में कौशल्या, सुमित्रा, अनुसूया, शबरी, स्वयं प्रभा, तारा, मन्दोदरी, त्रिजटा, शूर्पणखा आदि अनेक स्त्री पात्रों का चरित्र–चित्रण किया गया है।

महाभारत :

महाभारत महाकाव्य में महर्षि वेदव्यास जी ने कहा है– 'ये स्त्रियाँ लक्ष्मी हैं, ऐश्वर्य की कामना करने वालों को इनका सत्कार करना चाहिए। वश में रखकर पालन पोषण की गई स्त्री लक्ष्मी ही होती है।'[6]

तात्पर्य यह है कि यदि स्त्री वश में है तो लक्ष्मी नहीं तो....? 'ये धर्मग्रन्थों में पुरुष को परमात्मा माना गया है। स्त्री यदि अन्य पुरुष की कल्पना भी कर ले तो वह पापिन मानी जाती है। हमारे धर्मग्रन्थों में न केवल गलत कहा ही गया है बल्कि उनके साथ गलत व्यवहार भी किया गया है। जिसके कुछ उदाहरण निम्न हैं–

महाभारत में पाँच भाइयों का विवाह एक ही स्त्री से होना इस बात को सिद्ध करता है कि तत्कालीन समाज में नारी भोग्या थी।

युधिष्ठिर द्वारा अपनी पत्नी को दाँव पर लगाना अर्थात् नारी भावनाओं से मुक्त एक वस्तु मात्र है।

शकुंतला के जन्म लेते ही उसकी माँ के द्वारा उसका परित्याग करना।

गर्भवती शकुन्तला को न पहचान कर राजा दुष्यन्त के द्वारा उसे छोड़ देना।

पति के नेत्रहीन होने पर गांधारी के आजीवन नेत्र पर पट्टी बाँधना।

भरी सभा में द्रौपदी का निर्दयतापूर्वक अपमान करना।

इसके अतिरिक्त अनेक उदाहरण महाभारत में प्राप्त होते हैं, जो नारी के अस्तित्व के लिए अत्यन्त घातक हैं।

महाभारत के अनुशासन पर्व में कहा गया है–

जो पति की देवता के समान सेवा या परिचर्या करती है, पति के अतिरिक्त किसी से हार्दिक प्रेम नहीं करती, कभी नाराज नहीं होती तथा उत्तम व्रत का पालन करती है, जिसका दर्शन पति को सुखद जान पड़ता है, जो पुत्र के मुख की भाँति स्वामी के मुख को सदा निहारती रहती है तथा जो साध्वी है एवं नियमित आहार का सेवन करने वाली है, वह स्त्री धर्मचारिणी कहीं गई हैं।[7]

अर्थात् महाभारत काल में स्त्री पूर्णतः पुरुष पर आश्रित थी। उसका स्वयं का कोई स्वतंत्र अस्तित्व नहीं था।

बुद्धचरित :

अश्वघोष द्वारा रचित प्रस्तुत महाकाव्य में नारी को कल्याणकारी मार्ग की परम बाधा के रूप में चित्रित किया गया है। स्त्री निवारण नामक चतुर्थ सर्ग में स्त्री निन्दा सम्बन्धी कपितय पद्य दृष्टव्य हैं।[8]

पंचम सर्ग में स्त्री की निन्दा करते हुए कहा गया है कि इस संसार में वनिताओं का ऐसा विकराल व अपवित्र स्वभाव है तथापि वस्त्राभूषणों से वंचित पुरुष स्त्रियों के विषय में राग करता है।[9]

अश्वघोष ने स्त्री को कामपूर्ति करने वाली तथा ज्ञान प्राप्ति में बाधक माना है। वह अस्तित्वहीन एवं वासना युक्त वस्तु मानी गयी है।

रघुवंश एवं कुमारसम्भव :

कालिदास संस्कृत के शिरोमणि कवि हैं। उन्हें कवि कुलगुरू माना जाता है। उनका काव्य 'सत्यं शिवं सुन्दरं' का मूर्त रूप है। कालिदास के काव्यों में नारी पात्रों की स्थिति नाना प्रकार की है। वह तपोवन से लेकर राजभवनों तक फैली हुई है। उनके नारी पात्र कहीं दिव्य हैं तो कहीं अदिव्य, कहीं रानी–महारानी हैं तो कहीं तापसी, कहीं दासियों है तो कहीं देव दासियाँ। प्रत्येक वर्ग में नारी पात्रों के सामाजिक जीवन के अपने–अपने चित्र हैं। बहुत कुछ ऐसा है जो नारी से लेकर दासी तक सबमें एक समान है। कालिदास की रचनाएँ वास्तव में नारी सौन्दर्य की उपासना करती हैं। **कुमारसम्भव** में लोक कल्याण हेतु कुमार कार्तिकेय के जन्म निमित्त शिव–पार्वती के गृहस्थ जीवन का बहुत ही सुन्दर विवेचन किया गया है।

महाकवि कालिदास ने पुरातन युगों से चली आ रही नर–नारी युगल की धारणा को पार्वती और परमेश्वर के युगल का नाम दिया है। शिव जगत् को जन्म देने वाले पिता व पार्वती को माता माना जाता हैं। दोनों एक दूसरे के पूरक हैं। **रघुवंश महाकाव्य** का प्रथम श्लोक जगत् के माता–पिता शिव व पार्वती की ही वन्दना हैं–

''वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये।

जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।।'[10]

कुमारसम्भव महाकाव्य में भी शिव पार्वती की जगत् के माता–पिता के रूप में ही वन्दना की गई है–

स्त्रीपुंसौ आत्मभागौ ते भिन्नमूर्तेः सिसृक्षया।

प्रसूतिभाजः सर्गस्य तावेव पितरौ स्मृतौ।।[11]

संक्षिप्त रूप से कहने का तात्पर्य यह है कि कालिदास ने अपने महाकाव्यों में नारी के उदात्त रूप का चित्रण किया है।

साकेत :

राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त जी का प्रसिद्ध महाकाव्य है– 'साकेत'। प्रस्तुत काव्य में राम, सीता, लक्ष्मण आदि के साथ लक्ष्मण की पत्नी 'उर्मिला' को भी अत्यन्त महत्वपूर्ण स्थान देकर उनके विरह का बड़ा ही मार्मिक चित्रण किया है। साकेत का नवम सर्ग उर्मिला के विरह से तप्त आँसुओं से भीगा हुआ है। प्रेमोपासिका उर्मिला अपने मन मन्दिर में आराध्य स्वामी की प्रतिष्ठा करके स्वयं आरती की ज्वाला बन कर जल रही है। अतीत स्मृतियों की करूणा से भरी वेदना, अभिलषित एवं अप्राप्य प्रेम का संसार एवं ऐसी अपूर्ण स्थिति जिसमें सन्तुष्टि मात्र का एक प्रतिशत भी न हो। श्रृंगार परक वस्तुएँ उसकी विरहाग्नि को प्रज्ज्वलित करने में ईंधन के समान है। वह अपने मन–मंदिर में प्रिय की प्रतिमा स्थापित कर सम्पूर्ण भोगों को त्यागकर अपना जीवन योगमय बना लेती है–

मानस मन्दिर में सती, पति की प्रतिमा थाप,

जलती थी उस विरह में, बनी आरती आप,

आँखों में प्रिय मूर्ति थी, भूले थे सब भोग,

हुआ योग से भी अधिक उसका विषम वियोग।[12]

उर्वशी :

श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' द्वारा रचित महाकाव्य 'उर्वशी' में अप्सरा उर्वशी का एक गणिका के रूप में चित्रण किया गया है। वह अप्रतिम सौन्दर्य से पूर्ण एवं गंधर्वो के लिए भोग्या है। राजा पुरू के प्रति क्षणभर के लिए आकृष्ट होने पर उसे इन्द्र द्वारा मर्त्यलोक में रहने का अभिशाप मिलता है। यह मर्त्यलोक में पुरू को अपना पति चुनती है एवं उसके पुत्रों को जन्म भी देती है, किन्तु स्वर्गलोक की गणिका होने के कारण उसे पुनः उसी वृत्ति को अपनाकर वापस स्वर्गलोक जाना ही पड़ता है। दिनकर जी ने इस महाकाव्य में स्त्री के मन की बातों को इतनी सहजता से कहा है जो कोई भी स्त्री कहने में असमर्थ है। पुरुष परस्त्री गामी होने में तनिक भी संकोच नहीं करता एवं स्त्री को वस्तु के समान बताया गया है–

'उस पर भी नर में प्रवृत्ति है क्षण–क्षण अकुलाने की
नई–नई प्रतिमाओं का नित नया प्यार पाने की
वश में आई हुई वस्तु से इसको तोष नहीं है,
जीत लिया जिसको उसके आगे संतोष नहीं है।[13]

कहने का तात्पर्य यह है कि स्त्री भोग्या एवं वस्तु स्वरूपा है, उसे वश में करना, उसे जीत लेना सामान्य बात है यहाँ तक कि घर में पत्नी के होने के बाद भी पुरूष परस्त्रीगामी है।

रामचरितमानस :

रामचरितमानस के एक दोहे में गोस्वामी तुलसीदास ने रावण व मंदोदरी के संवाद को माध्यम बनाकर महिलाओं के स्वभाव में शामिल आठ अवगुणों के विषय में बताया है–

नारी सुभाऊ सत्य सब कहहीं। अवगुत आठ सदा उर रहहीं।
साहस अनृत चपलता माया। भय अविवेक असौच अदाया।।[15]

अर्थात् नारी के स्वभाव के विषय में सत्य ही कहा गया है कि आठ अवगुण हमेशा उनके साथ रहते हैं। ये अवगुण हैं– दुःसाहस, झूठ बोलना, चंचलता के कारण निर्णय न ले पाना, माया रखने में माहिर, डरपोक, अविवेकी, कठोर एवं साफ–सफाई के साथ न रहने वाली।

एक अन्य स्थल पर तुलसीदास जी कहते हैं कि स्त्री का पुरुष के बिना कोई अस्तित्व नहीं है–

''जिय बिन देह नदी बिनु बारी।
तैसिअ नाथ पुरुष बिनु नारी।''[15]

तुलसीदास जी ने रामचरितमानस में सीता के उदात्त रूप का चित्रण किया है एवं साथ ही समाज में व्याप्त नारी स्थिति पर भी पर्याप्त प्रकाश डाला है। तत्कालीन समाज में नारी की स्थिति अत्यन्त शोचनीय थी, उसे वस्तु समान एवं निष्कृष्ट माना जाता था। इसी कारण एक प्रसंग में तुलसीदास जी ने कहा है–

ढोल गँवार शूद्र पशु नारी।
सकल ताड़ना के अधिकारी।।[16]

यह स्थिति नारी के अस्तित्व के लिए अत्यन्त ही घातक एवं अपमान जनक है।

पद्मावत :

मलिन मुहम्मद जायसी द्वारा रचित 'पद्मावत' महाकाव्य में नारी के एक ऐसे रूप को प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है, जो मध्यकालीन कुप्रथाओं से ओत–प्रोत था। नागमती एवं पद्मावती दोनों एक दूसरे की सपत्नीक थीं, इसके बाद भी उनसे आपस में प्रेम से रहने की अपेक्षा की जाती है। क्या कोई पुरुष यह स्वीकार करेगा कि उसकी पत्नी किसी अन्य पुरुष को भी पति बना ले एवं प्रथम पति को इसमें कोई आपत्ति न हो? यह भारतीय समाज में आज भी निन्दनीय माना जायेगा।

पद्मावत महाकाव्य में 'सती प्रथा' का भी उल्लेख्य किया गया है अर्थात् पति की मृत्यु के बाद पत्नी को उसकी चिता के साथ आत्मोत्सर्ग करना अनिवार्य था। जब रत्नसेन की मृत्यु हो जाती है तब उसकी दोनों पत्नियाँ पद्मावती व नागमती सती हो जाती है। जब अलाउद्दीन दुर्ग पर आक्रमण करता है तो हाथ मलता रह जाता है और बोल पड़ता है कि 'यह संसार झूठा है'–

छार उठाइ लीन्ह एक मूठी।

दीन्ह उड़ाइ परिथमी झूठी।।[17]

इसके अतिरिक्त अन्य प्राचीन महाकाव्यों जैसे– यामा, प्रियप्रवास, नूरजहाँ, कामायनी आदि में नारी के विषय में अनेक विचार धाराएँ सामने आई है। सदियों से ही भारतीय समाज में नारी की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है। उसी के बलबूते भारतीय समाज खड़ा है। किन्तु फिर भी वह सदियों से ही क्रूर समाज के अत्याचारों एवं शोषण का शिकार होती आई है। उसके हितों की रक्षा के लिए एवं समानता तथा न्याय दिलाने के लिए अनेक संस्थाएँ प्रयासरत है। महिला विकास के लिए विश्वभर में **महिला दिवस** मनाया जाता है। नारी की क्षमताओं को पुरुष प्रधान समाज रोक नहीं पाया। उसने स्वतंत्रता संग्राम जैसे आन्दोलन में कमर कसकर भाग लिया और स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् संविधान में बराबरी का दर्जा पाया।

नैसार्गिक रूप से स्त्री–पुरुष एक दूसरे के पूरक है। जैसे–जैसे समय आगे बढ़ रहा है वैसे–वैसे भारतीय नारी के कदम भी आगे बढ़ रहे हैं। आज वह 'देवी' नहीं बनना चाहती बल्कि सच्चे अर्थों में इंसान बनना चाहती है। आज की नारी ममतामयी है, त्यागमयी है। नारी त्याग और साधना के बलबूते पर समाज में प्रत्येक पहलू से जुड़ी है। वह आत्मनिर्भर है, अपने अधिकार व कर्तव्य के प्रति सचेत है, संघर्षरत है। यद्यपि नारी शिक्षा से आज कामकाजी महिलाओं की संख्या में वृद्धि हुई है तथापि हमारे समाज में निःस्वार्थ सेवा हर क्षेत्र में है, जो अमूल्य है।

सन्दर्भ पुस्तकें :

1. रघुवंश– 1/1
2. वाल्मीकि रामायण सु0का0 15–55 (16, 13)
3. वाल्मीकि रामायण सु0का0 36/31
4. वाल्मीकि रामायण बा0का0 सर्ग 4–7
5. वाल्मीकि रामायण अयोध्या काण्ड
6. महाभारत– 11.5
7. महाभारत, अनुशासन पर्व अ0 146, श्लोक 37.52

8. बुद्धचरित 4/16/21

9. बुद्धचरित 5–64

10. रघुवंशम् – 1/1

11. कुमारसंभव 2/17

12. साकेत

13. उर्वशी (प्रथम सर्ग)

14. रामचरितमानस (रामायण मंदोदरी संवाद)

15. रामचरितमानस

16. रामचरितमानस

17. पद्मावत (पद्मावती–नागमती सती खण्ड)